

राष्ट्र पिता बापू



2 अक्टूबर को पैदा हुए,
पोरबंदर जन्मस्थान,
पुतली बाई थी माता,
कबा पिता का नाम ।
धन्य हैं वो माता, जिसने
गांधी जैसा लाल दिया,
गांधी ने निज देश का
विश्व में ऊँचा भाल किया ।
महान आत्मा थी वह ,
सो महात्मा कहलाये ,
माता जी को दिये वचन
विदेशों में भी ना भुलाए ।
विदेशी सत्ता भी घबराती थी
मनोबल था महान,
ऐसी अद्भुत शक्ति को
कोटि कोटि प्रणाम ।
दयावान, कृपा निधान,
क्लांतहीन, हे चिर महान,
परस्पर जग में लड़ रही है
बापू तेरी संतान ।
इक बार जग में गांधी जी
फिर से तुम आ जाओ,
अहिंसा व मनुष्यता का
पाठ सबको सिखलाओ ।
राम राज पुनः लाने की
कल्पना जो तुमने की थी,
वह अभियान हे गांधी जी
फिर से देश में चलवाओ ॥

मेरे द्वारा 10 वर्ष की आयु (1977) मे मेरे जीवन की प्रथम स्वरचित काव्य रचना

अनुज कुमार कुच्छल
सीनियर सेक्शन इंजिनियर
मध्य – पश्चिमी रेल मंडल, कोटा (राजस्थान)